4. चाँद का कुर्ता

हठ कर बैठा चाँद एक दिन, माता से यह बोला,
"सिलवा दो माँ, मुझे ऊन का, मोटा एक झिंगोला।

सन-सन चलती हवा रात भर, जाड़े से मरता हूँ,
ठिठुर-ठिठुर कर किसी तरह, यात्रा पूरी करता हूँ।

आसमान का सफर और यह मौसम है जाड़े का,
न हो अगर तो ला दो कुर्ता ही कोई भाड़े का।"

बच्चे की सुन बात, कहा माता ने, "अरे सलोने!
कुशल करें भगवान, लगे मत तुझको जादू-टोने।

जाड़े की तो बात ठीक है, पर मैं तो डरती हूँ।
एक नाप में कभी नहीं तुझको देखा करती हूँ।

कभी एक अंगुल भर चौड़ा, कभी एक फुट मोटा,
बड़ा किसी दिन हो जाता है और किसी दिन छोटा।

घटता-बढ़ता रोज़ किसी दिन ऐसा भी करता है,
नहीं किसी को भी आँखों को दिखलाई पड़ता है।

अब तू ही यह बता, नाप तेरी किस रोज़ लिवायें,
सी दें एक झिंगोला जो हर रोज़ बदन में आये?"

-रामधारी सिंह 'दिनकर'

शब्दार्थ

हठ	–	ज़िद
झिंगोला	–	ढीला-ढाला वस्त्र
भाड़े का	–	किराये का
1 फुट	–	12 इंच की लंबाई

अभ्यास

चाँद की बात

1. चाँद ने ऊन का मोटा झिंगोला सिलवाने की बात क्यों की ?
2. चाँद की माँ को उसका झिंगोला सिलवाने में क्या परेशानी है ?
3. चाँद में किस तरह के बदलाव आते हैं ?
4. चाँद ने कौन-सी यात्रा पूरी करने की बात की है ?
5. आप चाँद के लिए कैसा झिंगोला बनाएँगे ?

किराया-भाड़ा

'न हो अगर तो ला दो कुर्ता ही कोई भाड़े का ।'

कविता की इस पंक्ति में रेखांकित शब्द 'भाड़े का' का अर्थ है – किराए का।

1. क्या आपने कभी कोई चीज़ भाड़े पर ली है ? कौन-कौन सी, बताइए।
2. किराए पर चीज़ें क्यों ली जाती हैं?
3. **आप अपनी जरूरत की कौन-कौन सी चीज़ें किराए पर ले सकते हैं? घेरा लगाइए ।**

पेंसिल	कॉपी	कुर्ता	किताब	कंबल
कंघा	मकान	बस्ता	रोटी	जूते

4. किन्हीं पाँच चीज़ों के नाम बताइए जो किराए पर नहीं ली जा सकतीं –

---------- ---------- ---------- ---------- ----------

5. चाँद ने भाड़े पर कुर्ता लाने की बात क्यों की ?

6. चाँद के लिए भाड़े पर कितने कुर्ते लाने की ज़रूरत पड़ेगी?

चंदा मामा दूर के

1. **'एक नाप में कभी नहीं तुझको देखा करती हूँ ।'** क्या चाँद की माँ की यह बात ठीक है? कैसे ?

2. **'घटता - बढ़ता रोज़ किसी दिन ऐसा भी करता है,**
नहीं किसी की भी आँखों को दिखलाई पड़ता है ।'

चाँद के घटने-बढ़ने पर जो उसका आकार बनता है उसे चाँद की कलाएँ कहते हैं । नीचे चाँद की कलाएँ दी गई हैं। इन्हें ध्यान से देखिए और चाँद के घटने-बढ़ने से पूर्णिमा, अमावस्या को समझिए।

बातचीत के लिए

1. चाँद की माँ उसे 'सलोने' कहकर बुलाती है । आपको लोग क्या कहकर बुलाते हैं –

व्यक्ति	बुलाने का नाम
माँ	----------
पिताजी	----------
बहन	----------
भाई	----------
दोस्त	----------

2. **बच्चे की सुन बात कहा माता ने, ''अरे सलोने !**
कुशल करे भगवान, लगे मत तुझको जादू-टोने ।''

चाँद की माँ यह प्रार्थना करती है कि भगवान उसके बच्चे की रक्षा करें, उसे जादू-टोने से बचाए रखें । क्या आपकी माँ, दादी, नानी या कोई और भी आपके लिए ऐसी प्रार्थना करते हैं ? लिखिए -

कौन करते हैं?	क्या कहते हैं?
---	---
---	---
---	---
---	---

3. आपके अनुसार जादू-टोना क्या है ?

4. क्या आप ऐसी बातों पर विश्वास करते हैं ? क्यों ?

5. क्या आपके परिवार के सदस्य ऐसी बातों पर विश्वास करते हैं? क्या आप उनसे सहमत हैं?

भाषा के रंग

1. **'जाड़े-भाड़े' शब्दों की लय समान है। आप इन शब्दों की समान लय वाले शब्द लिखिए।**

(क) झिंगोला ---------
(ख) बात ---------
(ग) ऊन ---------
(घ) हवा ---------

2. **नीचे दिए गए वाक्यों को ध्यान से पढ़िए -**

- ठिठुर कर यात्रा पूरी करता हूँ ।
- ठिठुर – ठिठुरकर यात्रा पूरी करता हूँ ।

दोनों वाक्यों में ठंड लगने की बात की गई है ।

(क) फिर कवि ने 'ठिठुर' और 'ठिठुर-ठिठुरकर' का अलग-अलग प्रयोग क्यों किया है ?

(ख) किस वाक्य में ज़्यादा ठंड लगने की बात है ?

यहाँ एक ही शब्द एक साथ दो बार प्रयोग करने से उसके अर्थ में तीव्रता आती है। यानी उस पर बल पड़ता है । वह 'बहुत' के अर्थ में आया है।

(ग) अब आप नीचे दिए गए वाक्यों को पढ़िए और बताइए कि वाक्य का रेखांकित अंश क्या अर्थ दे रहा है -

(i)
- पत्ते **ज़ोर से** हिल रहे थे ।
- पत्ते **ज़ोर-ज़ोर से** हिल रहे थे ।

(ii)
- अरे बच्चो ! **जल्दी** चलो ।
- अरे बच्चो ! **जल्दी-जल्दी** चलो ।

(iii)
- **देखो**, बच्चा बाल्टी उठा रहा है ।
- **देखो-देखो** बच्चा बाल्टी उठा रहा है ।

3. 'घटता – बढ़ता रोज़ किसी दिन ऐसा भी करता है' पंक्ति में '**घटता-बढ़ता**' शब्द – जोड़ा है जिसमें चाँद के घटने और बढ़ने की बात की गई है । दोनों शब्द एक-दूसरे का विपरीत अर्थ देते हैं। नीचे दिए गए शब्द जोड़ों को पूरा कीजिए -

(क) ऊपर ----------
(ख) अंदर ----------
(ग) ठंडा ----------
(घ) कम ----------
(ङ) आना ----------
(च) दिन ----------

बाहर
गर्म
जाना
रात
ज़्यादा
नीचे

4. चाँद पर आधारित नीचे दी गई कविता को पढ़िए ।

गोल हैं खूब मगर
आप तिरछे नज़र आते हैं ज़रा।
आप पहने हुए हैं कुल आकाश
तारों-जड़ा;
सिर्फ़ मुँह खोले हुए हैं अपना
गोरा-चिट्टा
गोल-मटोल,
अपनी पोशाक को फैलाए हुए चारों सिम्त[1]।
आप कुछ तिरछे नज़र आते हैं जाने कैसे
– खूब हैं गोकि!
वाह जी, वाह!
हमको बुद्धू ही निरा समझा है!
हम समझते ही नहीं जैसे कि
आपको बीमारी है;
आप घटते हैं तो घटते ही चले जाते हैं,
और बढ़ते हैं तो बस यानी कि
बढ़ते ही चले जाते हैं–
दम नहीं लेते हैं जब तक बिलकुल ही
गोल न हो जाएँ,
बिलकुल गोल।
यह मरज़ आपका अच्छा ही नहीं होने में...
आता है।

1. सिम्त – दिशा

– शमशेर बहादुर सिंह

आपकी कलम और कल्पना

1. 'चाँद का कुर्ता' कविता को कहानी के रूप में लिखिए ।
2. आप भी चाँद पर अपनी एक कविता बनाइए ।